68. S, N श्येनाः for श्वानः—E प्ररुदति पुरे द्वारे.—C क्रोशंतो, the others वासंति.—After this A, S insert: प्रदोषे कुक्कुटारावो निशीथे सुरभिध्वनिः। अन्यं स्वामिनमिच्छन्ति अकालफलिता द्रुमाः॥—70 D °पातः—D °भवः—After this A, S insert: स्थलसलिलचराणां व्यत्ययो मेघकाले बहुसलिलविधायी ग्रीष्मकाले ऽभवाय (S भयाय)। मधु भवनविलीनं तत् करोत्याशु शून्यं मरणमपि निलीना मक्षिका मूर्ध्नि नीला॥.—72. S दिनैः for द्विजैः—73. A, S, D दक्षिणाः—D, E मनोर्वेद.—The words इति स्व° only in A, S.—75. C writes भूमेर्म्मरणं, but explains by स्फोटनं; D द्रवणं, it seems.—76. A पाषांडानां.—A ईचुः—D, E लोकः for राजा.—77. A क्षिद्धि भिद्धि.—78. E प्रभ ति for प्रेत.—In A चये has been changed into गृहे; E चयः—79. A लूटा.—E पतंग.—E नित्योच्छिष्टमस्त्रीकं.—D यच्च गृहं.—80. A मरणम्, D मरणरकम्.—81. A, C मार्हेंद्रीं च, E मार्हेंद्रेभिः—The words इति श्र° only in A, S, and the margin of N.—82. This distich is numbered also 82 in A.—83. N उत्पातांस्तान्, and so, it seems, also C.—A, D, E विंद्याद्.—84. D कंपाः—C, S निस्वनाः—C, N °मयोदयाः—85. D, S, N मधु for बहु.—D °माधवं.—86. A अग्नि°.—D, E °ज्वलनास्फोट, S *prima manu* नास्फोट, *sec. manu* as our text.—A अनल.—B, D संकुल for आहत.—A अरुणसंध्यां; N *prima manu* संध्यां, in C uncertain, a part of the explanation being omitted.—D ग्रीष्मं, A ग्रीष्म.—88. All but C, N, S परिवेष.—89. D, E. नद्युदपानसरसां.—A वृद्धार्द्धपूरण, N *prima manu* वृद्धार्द्ध, the following illegible, but *sec. manu* वृद्ध्यूर्द्धतरणं, like C; D वृद्ध्यूर्द्धपूरणं, E वृद्ध्यूर्द्धचरणं, S वृद्धार्द्धापूरण.—N दारणं, D दरणं.— E चापि गेहानां.—91. A, S निर्घोषो—A अपापा.—93. D सूर्योदये ऽस्ते.—N मत for सृत.—94. A उत्पातविरूप°.—95. N, E चित्रा, A चित्रं.—N स्त्रीणां.—S गोजाविस्तग.—96. N शुभा सृताः—A, S, N, E च्युतावन्यत्र.—C ते चातिदारुणाः—97. All but C, E गाथा.—D, E, S, N चेष्टितं च यत्.—D व्यतिक्रमः—The last distich is numbered 99. in A, though it ought to be 104 with him, like in S.—In C the number is 99, in D 98.—The title in C is उत्पाताध्यायः—The number of the Ch. in A, E is 45, in B, D 46, no number in N, S, in C 44.

---

## CHAPTER XLVII.

2. C वराहमिहिरस्य, N वराहस्य.—3. A तस्यैतत्.—E नात्र for मे ऽत्र.—The 4th in S is the 9th of the others, but A, and of our text. In A the 4th is om. wholly, and vs. 3 is followed by vs. 5.—7. A, S, N write प्रोद्य, the others प्रोभ्य.—S दिनांताः—D, E N रुचिरमयू°, A कविरैर्मयू°.—8. D किरणैः शुभान्वितं.—9. This distich is the 4th in S.—10. C, B, D, N विस्फुलिंगाश्च येषां.—N न चैव याति ध्वंसं.—D ध्वंसं यायाति.—